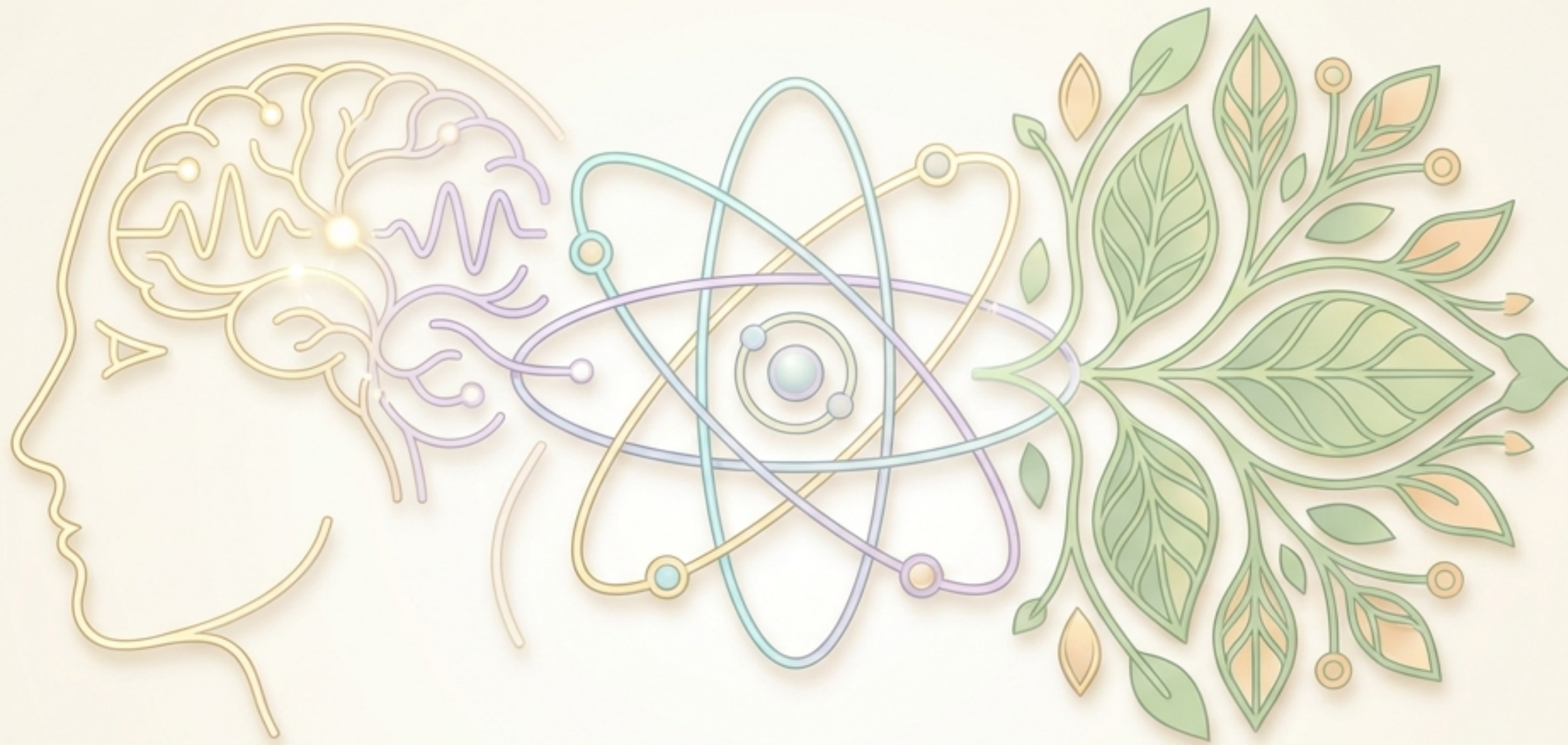




समस्याएँ आज की, समाधान कल के (भाग १)

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिक समाधान का महा-विज्ञान (अध्याय १-४ का सार)

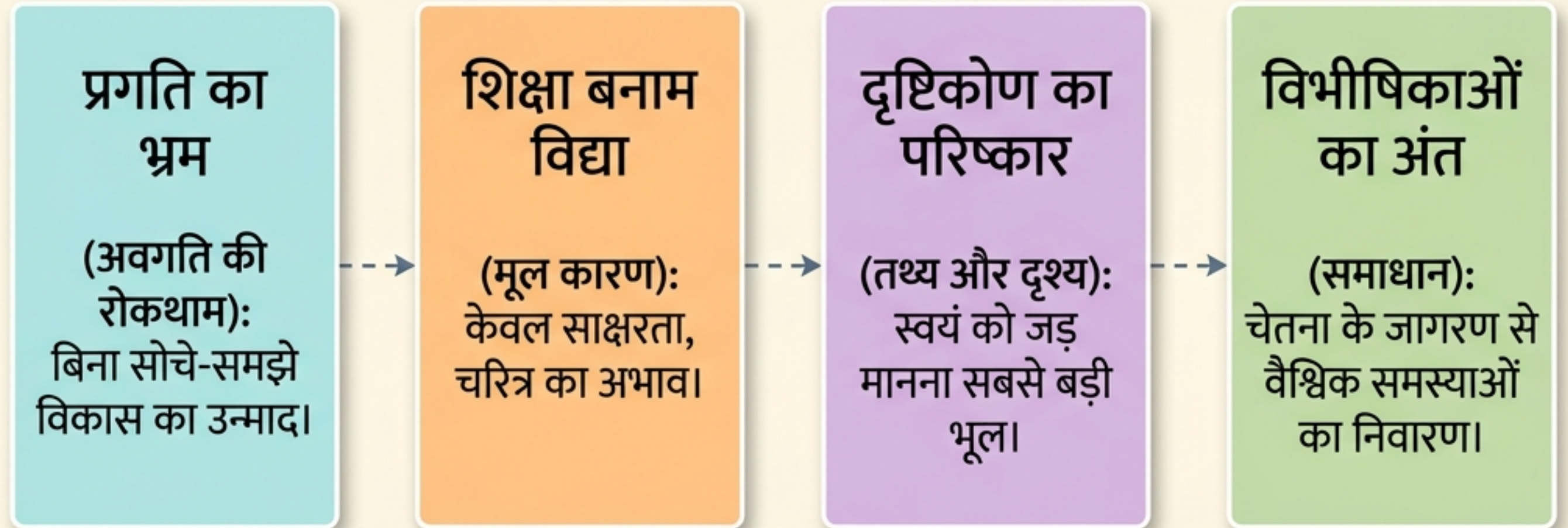
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९०
को वन्दनीया
माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहिगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

युग-विमर्श: समस्या से समाधान का मार्ग



प्रगति से पहले अवगति (पतन) की रोकथाम

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदगूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



1

वैज्ञानिक उपलब्धियों और तात्कालिक लाभ का गहरा उन्माद।

2

बिना रोकथाम के अंधाधुंध विकास, अंततः विनाश का कारण है।

सड़क पर चलने वाला कोई पगला राहगीरों पर ईंट-पत्थर मारकर पंजर तोड़ सकता है—यह सरल है। कठिनाई तब है जब उस टूट-फूट को नए सिरे से ठीक करना पड़े।

वर्तमान पतन के तीन प्रमुख गणितीय और सामाजिक कारण



आधी अनुत्पादक जनसंख्या (नारी क्षमता)

- **समस्या:** महिला क्षमता का केवल घरेलू कार्यों में अवमूल्यन।
- **समाधान:** नारी सशक्तिकरण = राष्ट्र का दुगुना आर्थिक व बौद्धिक उत्पादन।



जनसंख्या विस्फोट (गुणन चक्र का विज्ञान)

- **तथ्य:** २००० वर्ष पूर्व आबादी ३० करोड़ थी। वर्तमान में ६०० करोड़ (२० गुना)।
- **चक्र:** यह $२ \rightarrow ४ \rightarrow ८ \rightarrow १६$ के क्रम में बढ़कर प्रकृति का संतुलन अस्त-व्यस्त कर रहा है।

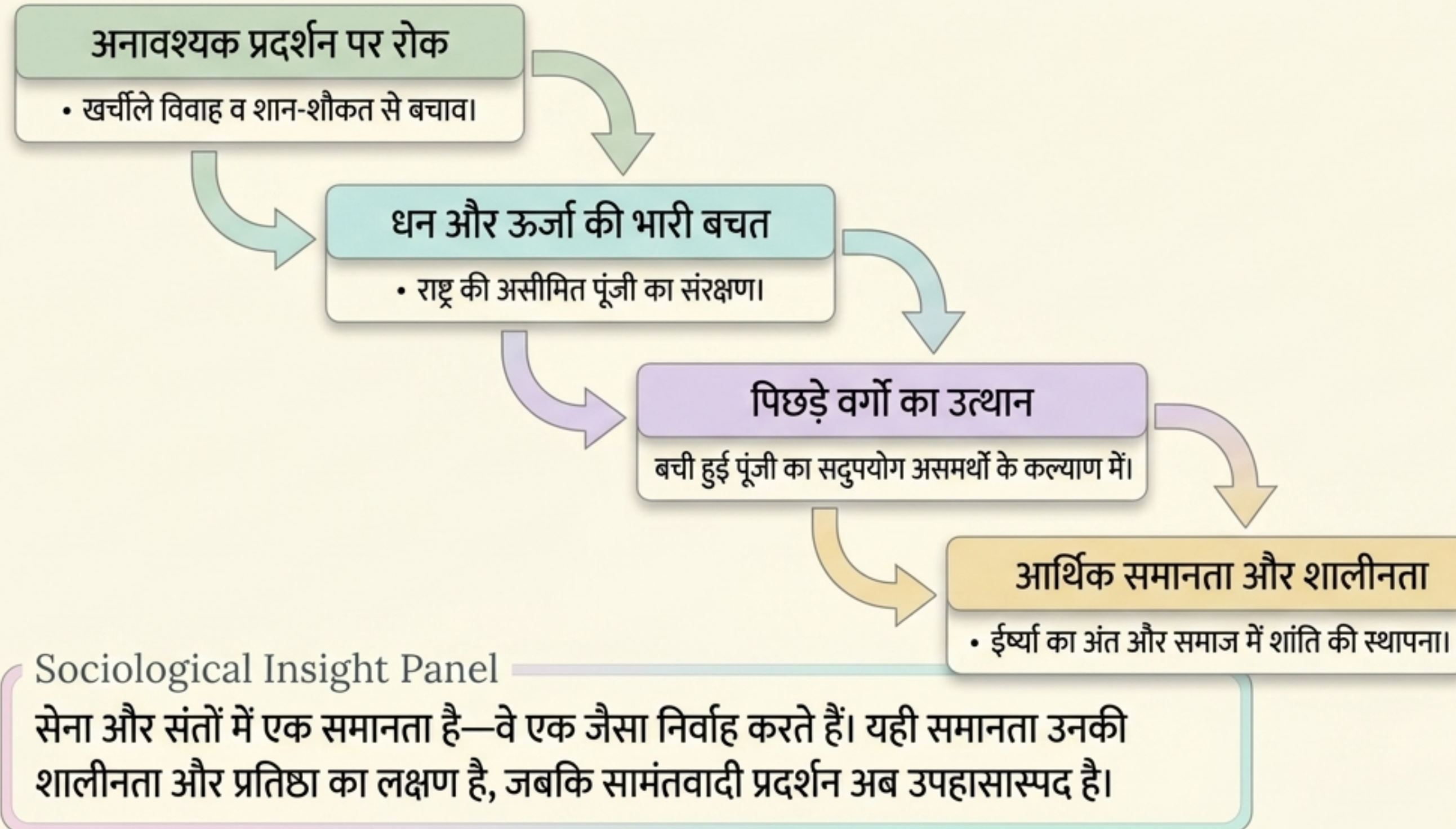


अपव्यय और प्रदर्शन (संसाधनों की बर्बादी)

- **समस्या:** नशेबाजी, फैशन, और दहेज-युक्त खर्चीले विवाह।
- **समाधान:** 'सादा जीवन-उच्च विचार' से आधी दरिद्रता का स्वतः निवारण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘सादा जीवन-उच्च विचार’ का सामाजिक-आर्थिक विज्ञान



वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच
में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

शिक्षा ही नहीं, विद्या भी (एक तुलनात्मक अध्ययन)

शिक्षा

(Schooling/Literacy)

- **प्रकृति:** केवल मस्तिष्क में जानकारी भरना (इतिहास, भूगोल, हिसाब)।
- **लक्ष्य:** केवल आजीविका (नौकरी) प्राप्त करना।
- **परिणाम:** अहंकार, बेकारी, और शारीरिक श्रम से घृणा को जन्म देती है।

विद्या

(True Wisdom/Sanjeevani)

- **प्रकृति:** ज्ञान चक्षु खोलना, जो मनुष्य को अन्धकार से निकालती है।
- **लक्ष्य:** गुण, कर्म, स्वभाव और समग्र व्यक्तित्व का विकास।
- **परिणाम:** प्रतिभा का परिष्कार, आत्मीयता, और समाज में उत्कृष्टता की स्थापना।

शिक्षा शरीर है,
विद्या उसकी चेतना।

दिशाहीन शिक्षा का भयानक परिणाम



[भ्रष्ट चिंतन व दुष्ट आचरण]



[बहुज्ञता / केवल शिक्षा]

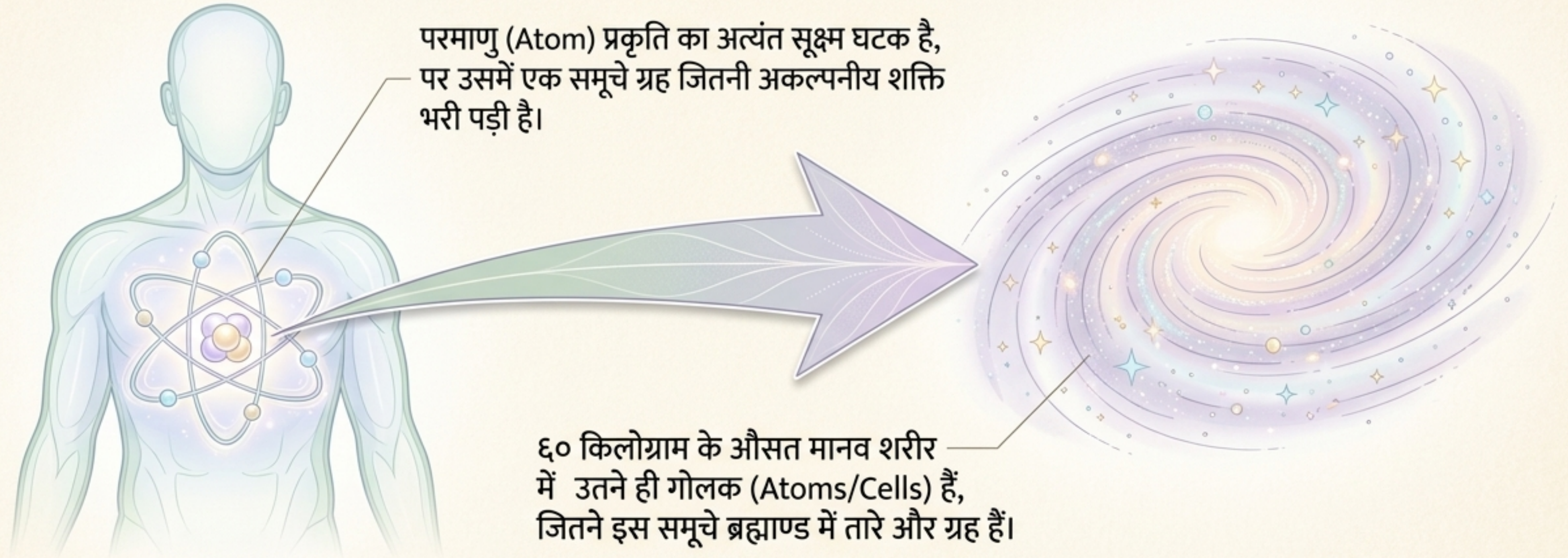


‘ब्रह्म-राक्षस’

- मानवीय गरिमा के बिना, केवल जानकारीयों का अंبار व्यक्ति को समाज के लिए अत्यधिक खतरनाक बना देता है।
- ऐतिहासिक तथ्य: जर्मनी, रूस, चीन और इजरायल जैसे नवोदित देशों ने शिक्षा को ‘चरित्र निर्माण’ के साँचे में ढाला, तभी वे विश्व पटल पर महाशक्ति बनकर उभरे।



तथ्यों को समझें: 'पिण्ड ही ब्रह्माण्ड है' (मानव क्षमता का विज्ञान)

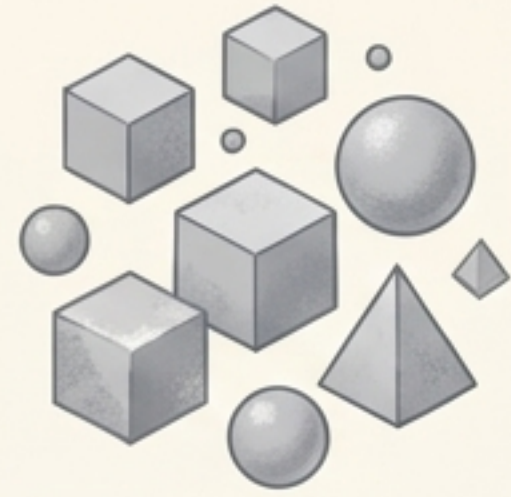


मनुष्य 'भटका हुआ देवता' है। स्वयं को मात्र इन्द्रियों का समुच्चय (मांस-पिंड) समझना और दृश्य जगत के जाल में उलझना सबसे बड़ी अज्ञानता है। नर से नारायण बनने की क्षमता इसी शरीर में है।

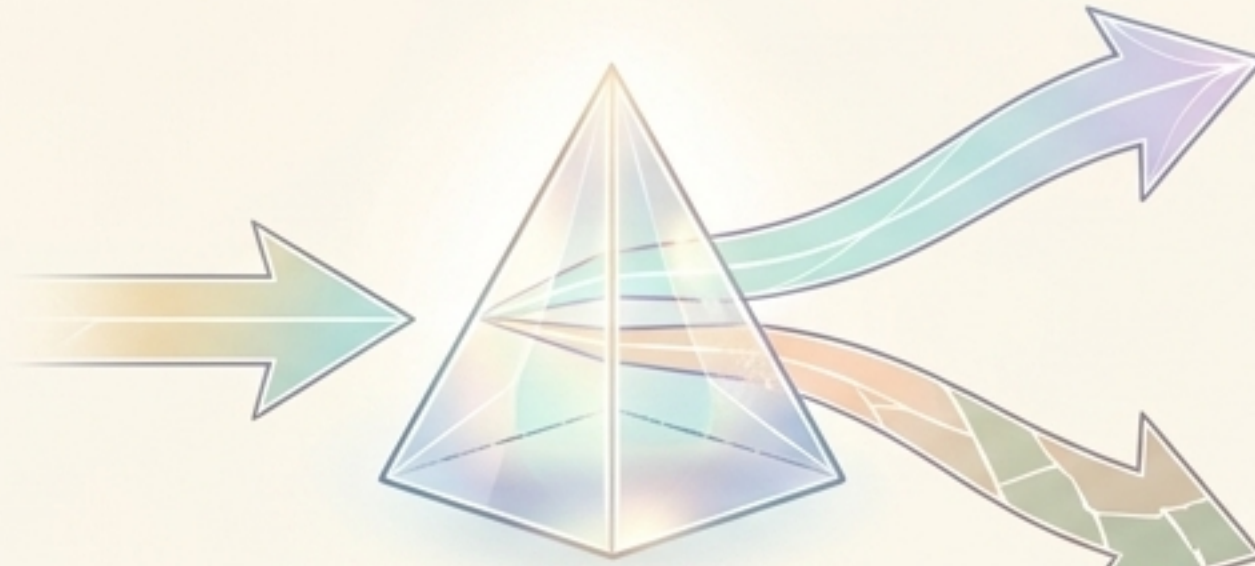
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संसार एक अनुभूति है (दृश्यों में न उलझें)



जड़ पदार्थ



दृष्टिकोण



स्वर्ग



नरक

- तटस्थ विश्व:

संसार मात्र जड़ पदार्थों का बना है। पदार्थ अपने आप में न पाप करते हैं न पुण्य।

- इंजन और चालक:

इंजन कितना भी कीमती हो, रेलगाड़ी अपने बलबूते लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकती। उसे चलाने की क्षमता सजीव चालक (मनुष्य) में है।

- परिस्थितियाँ गोटियाँ हैं:

जीवन एक शतरंज है। हार-जीत गोटियों पर नहीं, खिलाड़ी की मानसिकता पर निर्भर है।

उज्ज्वल भविष्य के लिए बाहरी पदार्थों को उलटने-पुलटने से काम नहीं चलेगा। एकमात्र उपाय है: 'दृष्टिकोण का परिवर्तन'।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

इन विभीषिकाओं से कौन जूझेगा? (पर्यावरण संकट का चक्र)

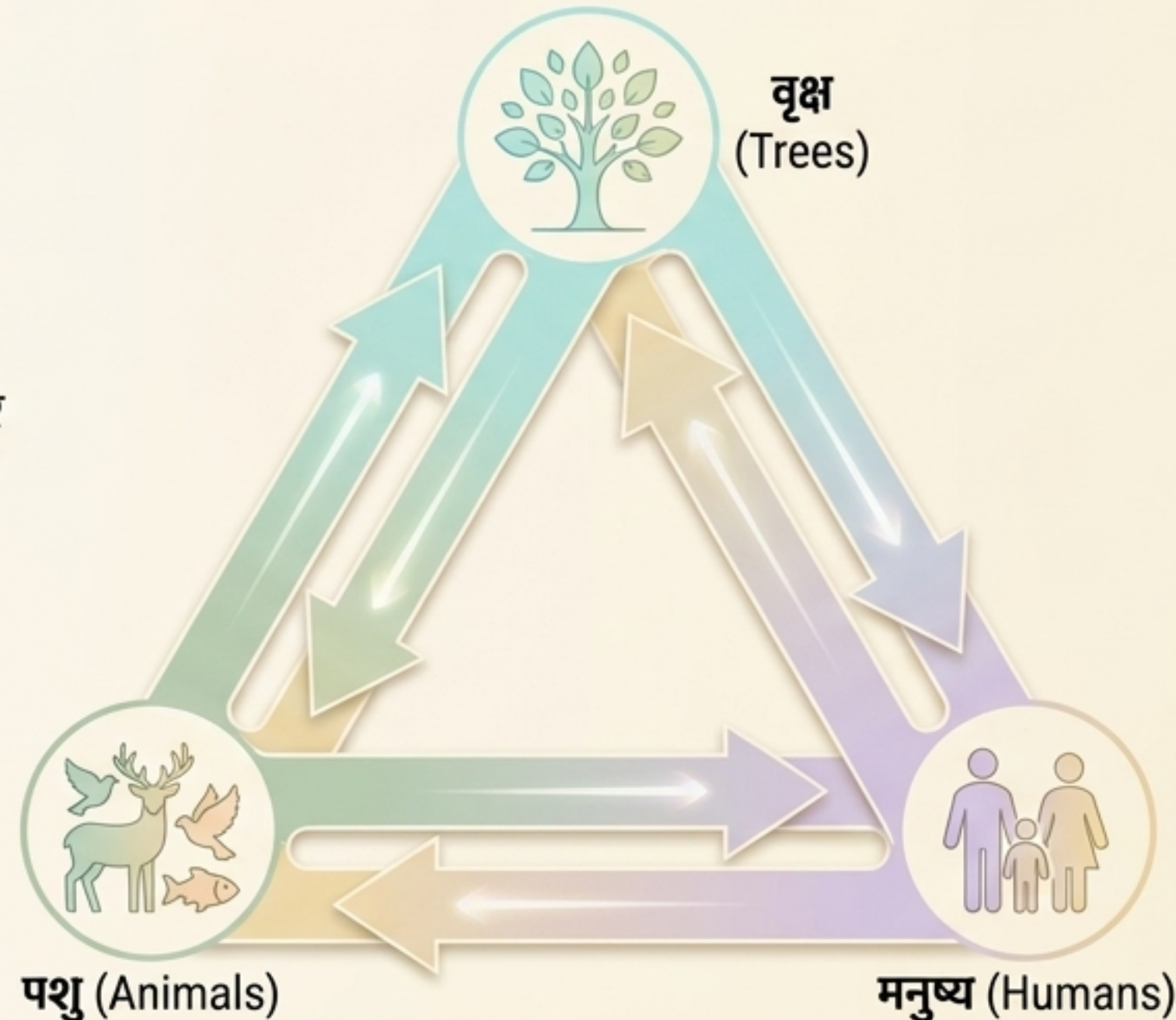


प्राकृतिक संतुलन का विज्ञान (जीवन का त्रिकोण)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

Concept Breakdown

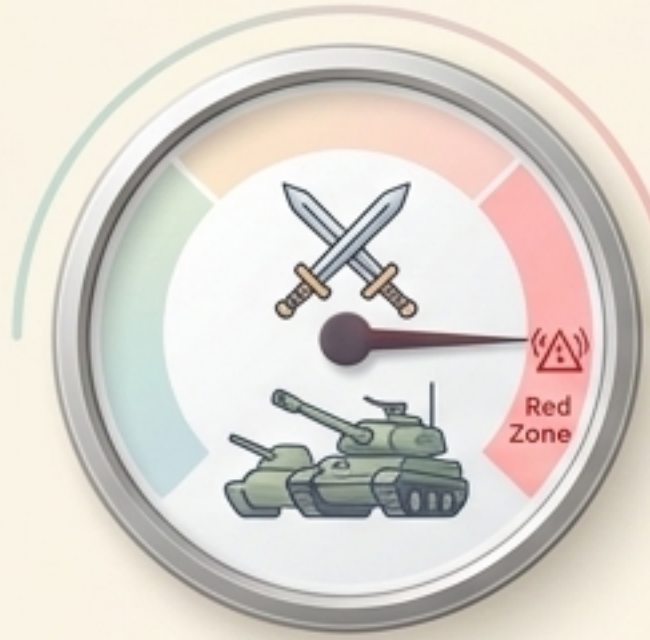
- **अन्योन्याश्रित सम्बन्ध**
(Interdependence): वृक्ष, पशु और मनुष्य का जीवन पूरी तरह एक-दूसरे पर निर्भर है। इनमें से एक मिटेगा तो शेष दो स्वतः समाप्त हो जाएँगे।
- **उर्वरता का चक्र:** वृक्षों की पत्तियों और पशु/मनुष्यों के मल-मूत्र से धरती की उर्वरता कायम रहती है।



Crisis

- **वर्तमान संकट:** उपजाऊ भूमि का कारखानों और आवासों के लिए अंधाधुंध अधिग्रहण। जीवन देने वाली उर्वरता समुद्र में बह रही है।

समाज और अर्थतंत्र का पतन (आँकड़े और वास्तविकता)



युद्ध व्यवसाय (War Economy)

- 20वीं सदी का कलंक: २ विश्वयुद्ध और लगभग २०० क्षेत्रीय युद्ध।
- नवसृजन में लगने वाली युवा और धन शक्ति का पूर्णतः ध्वंस।



नौकरशाही तंत्र (Bureaucratic Black Hole)

- आँकड़ा: जन-कल्याण के बजट का ८५% हिस्सा केवल नौकरशाही तंत्र के भरण-पोषण पर खर्च।
- जनता तक मात्र १५% की पहुँच (उसमें भी भ्रष्टाचार का रिसाव)।



शारीरिक और मानसिक पतन

- प्रतियोगिता और स्वार्थ के कारण मानसिक रोगों और शारीरिक व्याधियों की भयानक बाढ़।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समस्या की जड़ और समाधान का स्रोत (समग्र विश्लेषण)

शाखाएँ (विभीषिकाएँ - Chapter 4) →
प्रदूषण, युद्ध व्यवसाय, बेकारी,
मानसिक रोग, ग्लोबल वार्मिंग। (लक्षण)

तना (भ्रम - Chapter 1) →
संसाधनों का अपव्यय, अनावश्यक प्रजनन,
'प्रगति' की अंधी दौड़। (माध्यम)

जड़ें (मूल कारण - Chapter 2 & 3) →
दृष्टिकोण की विकृति, 'विद्या' का अभाव,
स्वयं को केवल शरीर मानना। (मूल कारण)

वरान्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिभर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगकृष्ण वेदवर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(माववी परिवार के संस्थापक)

मुरझाए पत्तों को सींचने
से वृक्ष हरा नहीं होता।
समस्याओं के बाहरी
लक्षणों से लड़ने के बजाय,
जड़ (मनुष्य के दृष्टिकोण
और विद्या) में खाद-पानी
डालना होगा।

समाधान कल के: एक उज्ज्वल भविष्य की ओर (नवसृजन की चेतना)



1. सादगी अपनाएँ: सादा जीवन, उच्च विचार—आर्थिक विषमता का अचूक समाधान।



2. विद्या से जुड़ें: शिक्षा को केवल आजीविका नहीं, चरित्र निर्माण (संस्कार) का साधन बनाएँ।



3. आत्मबोध: अपने भीतर की ब्रह्मण्डीय शक्ति (नर से नारायण) को पहचानें।



4. संतुलन: प्रकृति और चेतना का सम्मान करें, क्योंकि सब कुछ अन्योन्याश्रित है।

**महाक्रान्ति कोई बाहरी घटना नहीं, आपके भीतर का विचार-परिवर्तन है।
निराशा को त्यागें, देवमानवों का नया वसंत आप से ही आरम्भ होगा।**

“

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)